मेन्स मास्टर

दक्षिण एशियाई पड़ोस में भारत: दोस्ती या मनमुटाव?

प्रसंग

भारत और मालदीव के बीच हालिया गतिरोध ने भारत की पड़ोसी प्रथम नीति (एनएफपी) के बारे में गंभीर चिंता पैदा कर दी है। छोटे पड़ोसियों में चाइना कार्ड खेलने का चलन बढ़ रहा है।
राकेश सूद (पूर्व राजदूत) का लेख अपने पड़ोसियों के साथ भारत के संबंधों, ऐतिहासिक प्रभावों और चुनौतियों पर ध्यान केंद्रित करते हुए 2024 के चुनावों में क्या उम्मीद की जाए, इस पर चर्चा करता है। यह प्रमुख दक्षिण एशियाई देशों में राजनीतिक स्थितियों का स्नैपशॉट प्रदान करता है और वैश्विक अनिश्चितताओं पर प्रकाश डालता है। लेख में क्षेत्रीय गतिशीलता में बदलाव की भी आशंका जताई गई है, जिसमें वैश्विक घटनाओं का प्रभाव और अमेरिका, चीन और भारत जैसे प्रमुख खिलाड़ियों के बीच विकसित होते रिश्ते शामिल हैं।

राजनीतिक उथल-पुथल और खिसकती रेत:

• क्षेत्र में चुनावी बुखार छाया हुआ है: सभी दक्षिण एशियाई देशों (अफगानिस्तान और नेपाल को छोड़कर) में 2024 में चुनाव होंगे, जिससे क्षेत्रीय गतिशीलता में अप्रत्याशितता की एक परत आ जाएगी। भारत के आगामी चुनाव, प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी के ऐतिहासिक तीसरे कार्यकाल की ओर बढ़ने की संभावना के साथ, विशेष रूप से महत्वपूर्ण होंगे, क्योंकि उनकी मुखर विदेश नीति और "मजबूत भारत" दृष्टि का पूरे क्षेत्र पर प्रभाव पड़ता है।

• **बांग्लादेश एक चौराहे पर:** बांग्लादेश में चौथे कार्यकाल के लिए शेख हसीना की तलाश को विपक्षी बहिष्कार और विरोध प्रदर्शनों से चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, लेकिन उनकी सफलता भारत और चीन के साथ संबंधों को कुशलतापूर्वक संतुलित करने पर निर्भर करेगी। स्थिरता बनाए रखने और आंतरिक दबावों को प्रबंधित करने की उनकी क्षमता क्षेत्रीय सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण होगी।

• **परिवर्तन में भूटान:** सरकार के बदलाव के साथ, भूटान एक चौराहे पर खड़ा है। चीन के साथ सीमा वार्ता में प्रगति, गेलेफू परियोजना से प्रेरित आर्थिक विकास और तेजी से जटिल भू-राजनीतिक परिदृश्य पर काबू पाना नए नेतृत्व के लिए प्रमुख चिंताएं होंगी।

• **पाकिस्तान का नाजुक संतुलन:** पाकिस्तान में नवाज शरीफ की सत्ता में संभावित वापसी अनिश्चितता से भरी है। सेना के साथ उनका रिश्ता, भारत का सतर्क रुख और आर्थिक संकट और उग्रवाद सहित देश की आंतरिक चुनौतियाँ, दक्षिण एशिया के साथ उसके जुड़ाव के भविष्य को आकार देंगी।

• **श्रीलंका का अनिश्चित पथ:** द्वीप राष्ट्र के चुनाव, 2024 की अंतिम तिमाही में होने की उम्मीद है, अत्यधिक ध्रुवीकृत माहौल में होंगे। सुधारों के लिए राष्ट्रपति रानिल विक्रमसिंघे का जोर और हस्तांतरण का आह्वान एसएलपीपी की राष्ट्रवादी बयानबाजी से टकरा रहा है, जिससे आर्थिक सुधार और राजनीतिक स्थिरता अनिश्चित हो गई है।

आर्थिक संकट और भू-राजनीतिक पुनर्गठन:

• चीन के बढ़ते पदचिह्न: बेल्ट और रोड पहल जैसी परियोजनाओं के माध्यम से दक्षिण एशिया में चीन के आर्थिक दबदबे और रणनीतिक जुड़ाव ने एक नई शक्ति गतिशीलता पैदा की है। यह भारत के पारंपरिक प्रभुत्व को चुनौती देता है और अन्य देशों को एक नाजुक संतुलन कार्य करने के लिए मजबूर करता है।

• **अमेरिका-चीन प्रतिद्वंद्विता और इसकी छाया:** अमेरिका और चीन के बीच बढ़ती प्रतिद्वंद्विता ने दक्षिण एशिया पर एक लंबी छाया डाली है। क्षेत्रीय खिलाड़ी दोनों महाशक्तियों के साथ अपने संबंधों को कैसे प्रबंधित करते हैं और स्पिलओवर प्रभावों को कैसे कम करते हैं, यह आने वाले वर्ष में महत्वपूर्ण होगा।

• **भारत-अमेरिका साझेदारी:** अनिश्चित प्रक्षेप पथ: जबकि भारत-अमेरिका साझेदारी हाल के वर्षों में मजबूत हुई है, इसका भविष्य प्रक्षेप पथ अनिश्चित बना हुआ है। उभरते वैश्विक परिदृश्य, घरेलू राजनीतिक विचार और चीन के प्रति अलग-अलग दृष्टिकोण इस गठबंधन की सीमाओं का परीक्षण कर सकते हैं।

• **किनारे पर पड़ोस:** भारत के पड़ोसी, इसके मुखर रुख और बढ़ती चीन-भारत प्रतिस्पर्धा से सावधान होकर, वैकल्पिक साझेदारी की तलाश कर सकते हैं या हेजिंग रणनीतियों को अपना सकते हैं। इससे क्षेत्रीय परिदृश्य अधिक खंडित और बहुध्रुवीय हो सकता है।

अन्य उभरती चिंताएँ:

• **मालदीव का अलग रास्ता:** राष्ट्रपति मोहम्मद मुइज्ज़ू का "भारत बाहर" दृष्टिकोण क्षेत्रीय समीकरण में जटिलता जोड़ता है। भारत इस बदलाव पर कैसे प्रतिक्रिया देता है और क्या वह मालदीव में अपने रणनीतिक हितों को बरकरार रख पाएगा, यह देखना दिलचस्प होगा।

• **म्यांमार का आंतरिक संकट:** म्यांमार में चल रही उथल-पुथल का असर क्षेत्रीय स्थिरता पर पड़ रहा है। निरंतर अंतर्राष्ट्रीय दबाव और जुंटा की प्रतिक्रिया देश के प्रक्षेप पथ के प्रमुख निर्धारक होंगे।

• **वैश्विक चुनावों के लहरदार प्रभाव:** 2024 में कनाडा, ब्रिटेन और संभावित रूप से अमेरिका में होने वाले चुनावों के महत्वपूर्ण वैश्विक प्रभाव हो सकते हैं, जो विदेश नीति की प्राथमिकताओं और वैश्विक गठबंधनों में बदलाव के माध्यम से अप्रत्यक्ष रूप से दक्षिण एशिया को प्रभावित कर सकते हैं।

• **ताइवान का अस्थिर समीकरण:** जनवरी में ताइवान का राष्ट्रपति चुनाव चीन के साथ तनाव को और बढ़ा सकता है, संभावित रूप से अमेरिका-चीन संबंधों को प्रभावित कर सकता है और व्यापक भारत-प्रशांत सुरक्षा परिदृश्य पर प्रभाव डाल सकता है।

निष्कर्ष:
2024 दक्षिण एशिया में महत्वपूर्ण परिवर्तन और अनिश्चितता का वर्ष होने का वादा करता है। क्षेत्रीय चुनावों, आर्थिक बदलावों, भू-राजनीतिक पुनर्गठन और बाहरी प्रभावों का अंतर्संबंध एक गतिशील और संभावित रूप से अस्थिर वातावरण तैयार करेगा। आने वाले वर्ष में स्थिरता और प्रगति सुनिश्चित करने के लिए इन जटिल चुनौतियों से निपटना, आंतरिक दबावों का प्रबंधन करना और स्थायी साझेदारी बनाना सभी दक्षिण एशियाई देशों के लिए महत्वपूर्ण होगा।

भारत में नौ वर्षों में 24.8 करोड़ से अधिक लोग गरीबी से बाहर निकले: NITI रिपोर्ट

• **बहुआयामी गरीबी में महत्वपूर्ण गिरावट:** उत्तर प्रदेश, बिहार और मध्य प्रदेश जैसे राज्यों में बड़ी कमी के साथ, 2013-14 और 2022-23 के बीच 24.8 करोड़ से अधिक लोग (248.2 मिलियन) बहुआयामी गरीबी से बच गए।
• **राष्ट्रीय बहुआयामी गरीबी सूचकांक (एमपीआई):** नीति आयोग स्वास्थ्य, शिक्षा और जीवन स्तर में अभावों को देखकर गरीबी को मापने के लिए एमपीआई का उपयोग करता है।
• **राज्य-स्तरीय रुझान:** उत्तर प्रदेश में गरीबी से बाहर निकलने वाले लोगों की संख्या सबसे अधिक (5.94 करोड़) देखी गई, इसके बाद बिहार और मध्य प्रदेश का स्थान है।
• **सभी संकेतकों में सुधार:** इस अवधि के दौरान एमपीआई के सभी 12 संकेतकों में सुधार देखा गया।
• भविष्य के लक्ष्य: सरकार का लक्ष्य बहुआयामी गरीबी को 1% से कम करना है और 2024 तक एकल-अंकीय गरीबी स्तर को प्राप्त करने का विश्वास है।
• सतत विकास लक्ष्य (एसडीजी): भारत को 2030 के लक्ष्य से काफी पहले एसडीजी 1.2 (बहुआयामी गरीबी को कम से कम आधा कम करना) हासिल करने का अनुमान है।
जटिल अन्वेषण
• **त्वरित गिरावट के पीछे तर्क:** रिपोर्ट में विभिन्न सरकारी पहलों और योजनाओं का उल्लेख किया गया है, जिन्होंने गरीबी में तेजी से कमी लाने में योगदान दिया होगा। आप कुछ विशिष्ट उदाहरणों पर प्रकाश डाल सकते हैं।
• डेटा सीमाएँ: 2013-14 और 2022-23 के लिए रिपोर्ट के अनुमान डेटा की कमी के कारण अनुमानों पर आधारित हैं। इस सीमा का उल्लेख करने से विश्लेषण में पारदर्शिता और सूक्ष्मता जुड़ जाती है।
• **चुनौतियाँ और भविष्य के विचार:** हालाँकि रिपोर्ट महत्वपूर्ण प्रगति पर प्रकाश डालती है, फिर भी चुनौतियाँ और कमजोर आबादी हो सकती है। इन पर चर्चा करना और यह संबोधित करना कि भविष्य की नीतियां इनसे कैसे निपट सकती हैं, विश्लेषण को समृद्ध करेगा।

बहुआयामी गरीबी सूचकांक बनाम पारंपरिक गरीबी माप: अंतर को समझना
पारंपरिक गरीबी मापन
• ऐतिहासिक रूप से, गरीबी का आकलन मुख्य रूप से एकमात्र संकेतक के रूप में आय पर निर्भर करता था।
• आलोचनाएं उठीं, जिसमें बताया गया कि मौद्रिक और उपभोग-आधारित उपाय जीवन स्तर पर गैर-मौद्रिक कारकों के प्रभाव को पकड़ने में विफल रहे।
बहुआयामी गरीबी सूचकांक (एमपीआई) का परिचय
• बहुआयामी गरीबी सूचकांक (एमपीआई) पारंपरिक दृष्टिकोण से बदलाव का प्रतिनिधित्व करता है।
• नीति आयोग द्वारा विकसित, यह ग्लोबल एमपीआई का मॉडल है, जिसे ऑक्सफोर्ड पॉवर्टी एंड ह्यूमन डेवलपमेंट इनिशिएटिव (ओपीएचआई) और संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (यूएनडीपी) द्वारा संयुक्त रूप से प्रकाशित किया गया है।

अगले यूरोपीय संघ के रूप में दक्षिण एशिया का विचार अब दूर का सपना है

दक्षिण एशिया की चुनौतियाँ:
• राजनीतिक अस्थिरता: इस क्षेत्र में युद्ध, अधिनायकवाद और उतार-चढ़ाव वाले लोकतंत्रों का एक जटिल इतिहास है। भारत, दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र होने के बावजूद, लोकतांत्रिक सिद्धांतों में गिरावट और कॉर्पोरेट प्रभाव में वृद्धि का अनुभव कर रहा है। पाकिस्तान में महत्वपूर्ण सैन्य प्रभाव वाला एक अशांत लोकतंत्र है। बांग्लादेश तेजी से एकदलीय राज्य बनता जा रहा है।
• **आर्थिक संकट:** मजबूत विकास क्षमता के बावजूद, गरीबी और असमानता प्रमुख चिंताएँ बनी हुई हैं। सड़क, सार्वजनिक परिवहन और स्वच्छता जैसे बुनियादी ढांचे वैश्विक मानकों से पीछे हैं। क्षेत्रीय व्यापार कम है, जिससे आर्थिक प्रगति में बाधा आ रही है।
• **आतंकवाद**: पाकिस्तान, चरमपंथी इस्लामी समूहों के अपने इतिहास के साथ, क्षेत्रीय शांति और स्थिरता के लिए एक महत्वपूर्ण खतरा पैदा करता है।
• **चीनी प्रभाव:** क्षेत्र में चीन की बढ़ती उपस्थिति भारत के पारंपरिक नेतृत्व को चुनौती देती है और नई भू-राजनीतिक जटिलताएँ पैदा करती है।
उभरते खतरे:
• **लोकतंत्र का पतन:** लोकलुभावन नेताओं के उदय और पूरे क्षेत्र में असंतोष के दमन से लोकतांत्रिक मूल्यों और स्थिरता को कमजोर होने का खतरा है।
• **कॉर्पोरेट अल्पतंत्र:** अपने लाभ के लिए सरकारों में हेरफेर करने वाले शक्तिशाली पूंजीपतियों का उद्भव लोकतांत्रिक संस्थानों को और कमजोर करता है और सामाजिक असमानताओं को बढ़ावा देता है।

व्यापक प्रभाव:

• भारत के आंतरिक संघर्ष, राजनीतिक और आर्थिक दोनों, पूरे क्षेत्र में फैलने की संभावना है, जिससे संभावित रूप से अस्थिरता और संघर्ष में वृद्धि होगी।

• यूरोपीय संघ के समान एकीकृत और समृद्ध दक्षिण एशिया का सपना लगातार दूर होता जा रहा है।

कुल मिलाकर:

इसमें दक्षिण एशिया की वर्तमान स्थिति की एक गंभीर तस्वीर उभरती है, जो इसकी कई आंतरिक और बाहरी चुनौतियों को उजागर करती है। चल रही राजनीतिक अस्थिरता, आर्थिक असमानताओं और लोकतंत्र के लिए खतरों के साथ, क्षेत्र अनिश्चित भविष्य का सामना कर रहा है। क्षेत्रीय स्थिरता बनाए रखने और सतत विकास को बढ़ावा देने के लिए इन परस्पर जुड़ी चुनौतियों का समाधान करने और सहयोग और प्रगति के लिए नए रास्ते खोजने की आवश्यकता होगी।

प्रीलिम्स बूस्टर

भारत अर्जेंटीना में पांच लिथियम ब्लॉकों की खोज और विकास के लिए लगभग ₹200 करोड़ का निवेश करेगा: सरकार।

अर्जेंटीना के साथ भारत का लिथियम अन्वेषण और विकास समझौता:
- भारत अर्जेंटीना में पांच लिथियम खदानों की खोज और विकास में लगभग ₹200 करोड़ का निवेश करने के लिए तैयार है, जो ऊर्जा परिवर्तन और रणनीतिक खनिजों के लिए आपूर्ति श्रृंखला को सुरक्षित करने के लिए महत्वपूर्ण है।

लिथियम का महत्व और परियोजना विवरण:
- लिथियम ऊर्जा परिवर्तन के लिए महत्वपूर्ण है, और KABIL अर्जेंटीना के कैटामार्का प्रांत में लगभग 15,703 हेक्टेयर क्षेत्र को कवर करने वाले पांच लिथियम ब्राइन ब्लॉकों का पता लगाएगा और विकसित करेगा, जो रणनीतिक खनिजों के लिए आपूर्ति श्रृंखला हासिल करने की भारत की प्रतिबद्धता को उजागर करेगा।

ऐतिहासिक सहयोग और लिथियम त्रिभुज महत्व:
- भारत और अर्जेंटीना एक ऐतिहासिक सहयोग का प्रतीक हैं, जो द्विपक्षीय संबंधों में योगदान दे रहा है और एक स्थायी भविष्य के लिए ऊर्जा परिवर्तन का समर्थन कर रहा है, जिसमें अर्जेंटीना 'लिथियम त्रिकोण' का हिस्सा है, जिसके पास दुनिया के कुल लिथियम संसाधनों का आधे से अधिक हिस्सा है।

जयशंकर ने ईरानी समकक्ष से मुलाकात की, चाबहार, उत्तर-दक्षिण कनेक्टिविटी पर चर्चा की

भारत-ईरान राजनयिक चर्चाएं:
- विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने ईरानी समकक्ष होसैन अमीराब्दुल्लाहियन के साथ व्यापक चर्चा की, जिसमें रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण चाबहार बंदरगाह और अंतर्राष्ट्रीय उत्तर-दक्षिण परिवहन गलियारा (आईएनएसटीसी) कनेक्टिविटी परियोजना के साथ भारत की भागीदारी के लिए दीर्घकालिक रूपरेखा स्थापित करने पर ध्यान केंद्रित किया गया।

चाबहार का सामरिक महत्व:
- चाबहार बंदरगाह, भारत और ईरान के बीच एक संयुक्त विकास परियोजना है, जिसका उद्देश्य कनेक्टिविटी और व्यापार संबंधों को बढ़ाना है, जो ईरान के सिस्तान-बलूचिस्तान प्रांत में स्थित है।

अंतर्राष्ट्रीय उत्तर-दक्षिण परिवहन गलियारा (INSTC):
- भारत, ईरान, अफगानिस्तान, आर्मेनिया, अजरबैजान, रूस, मध्य एशिया और यूरोप को शामिल करते हुए 7,200 किलोमीटर लंबी मल्टी-मोड परिवहन पहल, आईएनएसटीसी परियोजना पर चर्चा हुई।

चाबहार बंदरगाह का महत्व

चाबहार बंदरगाह का रणनीतिक महत्व:
- चाबहार, ईरान का एकमात्र समुद्री बंदरगाह, भारत को फारस की खाड़ी और उससे आगे तक सीधी समुद्री पहुंच प्रदान करता है, जो एक वैकल्पिक व्यापार मार्ग, मध्य एशिया के प्रवेश द्वार और अफगानिस्तान में मानवीय सहायता और पुनर्निर्माण प्रयासों के लिए एक महत्वपूर्ण प्रवेश बिंदु के रूप में कार्य करता है।

बंदरगाह अवसंरचना और आर्थिक अवसर:
- शाहिद कलंतरी और शाहिद बेहेश्टी बंदरगाहों को मिलाकर, चाबहार व्यापार और कनेक्टिविटी के लिए एक महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचा आधार प्रदान करता है, जो भारत के लिए मध्य एशिया के साथ जुड़ने के रास्ते खोलता है, व्यापार, निवेश, आर्थिक विकास और रोजगार सृजन को बढ़ावा देता है।

भूराजनीतिक प्रभाव को मजबूत बनाना:
- चाबहार बंदरगाह के माध्यम से, भारत हिंद महासागर क्षेत्र में अपने रणनीतिक प्रभाव को मजबूत करता है, भू-राजनीतिक स्थिति को बढ़ाता है और आसपास के क्षेत्रों में मजबूत राजनयिक संबंधों को बढ़ावा देता है।

अंतर्राष्ट्रीय उत्तर-दक्षिण परिवहन गलियारा (INSTC) पृष्ठभूमि:
- पहली बार 2000 में विचार किया गया था, यह विचार रूस के बाल्टिक सागर तट को ईरान के माध्यम से अरब सागर में भारत के पश्चिमी बंदरगाहों से जोड़ने वाला एक परिवहन गलियारा बनाने का था, 2002 में रूस, भारत और ईरान द्वारा प्रारंभिक समझौतों पर हस्ताक्षर किए गए थे, जो बाद में अजरबैजान और इसमें शामिल हो ग

अंततः भारत, रूस, ईरान, अज़रबैजान और अन्य सहित 13 देशों द्वारा अनुमोदित किया गया।